गीतकार, जिनके गीत लोकगीत बन गए...

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशल स्पीकर

फ़िल्मी दुनिया भी कितनी अजब गजब है ना कि एक आदमी सेना की नौकरी छोड़ कर गीतकार बनने यहाँ आता है मगर नाकामयाब होकर लौट जाता है, कुछ वक़्त के बाद फिर आता है और फिर कामयाबी के ऐसे झंडे गाड़ता है कि फ़िल्मी दुनिया पर छा जाता है, उसका नाम फिल्मी गानों का पर्याय बन जाता है. वो गीतकार जिसकी क़ोई फ़िल्मी या साहित्यिक पृष्ठभूमि नहीं थी मगर उसके रोज़मर्रा क़ी सादा जबान में लिखे लोकप्रिय गीतों ने फ़िल्मी गीतों की न केवल भाषा बल्कि परिभाषा ही बदल के रख दी, जिसके लिखे गीत लोकगीत बनगए, लोकोक्तियां बन गये.

दोस्तों आज हम बात कर रहे हैं महान गीतकार आनंद बक्षी की. वो गीतकार, एक समय रेडियो पर बजने वाले हर तीन में से दो गीत जिसके लिखे हुआ करते थे. जिसने अपने जीवन में 636 फिल्मों में हर मूड व हर सिचुएशन के लिए 3500 सेअधिक गीत लिखे और जिनके उत्कृष्ट गीत, गीतों की लोकप्रियता के साथ ही फ़िल्म की सफलता की गारंटी हुआ करते थे.

उनके आगमन के पहले फ़िल्मी गीतों में उर्दू भाषा का अधिक प्रभाव पाया जाता था, मगर उन्होंने आम लोगों की सीधी सादी जुबान में ऐसे मधुर गीत रचे जिसे जनता ने सर आँखों पर लिया. अपनी इसी खासियत की वजह से आनंद बक्षी साहब की लगभग 40 सालों तक फ़िल्मी दुनिया पर बादशाहत रही. राजेश खन्ना को सुपरस्टार बनाने में उनके गीतों का बहुत बड़ा योगदान था. वो सुभाष घई की फिल्मों क़ी कामयाबी की निसंदेह बड़ी वजह थे और इसी कारण वो शक्ति सामंत, रमेश सिप्पी, जे ओमप्रकाश व यश चोपडा आदि के स्थाई गीतकार थे. वे अपने जीवन काल में रिकार्ड 40 बार फिल्म फेयर पुरस्कार के लिए नामित हुए व 4 बार उन्हें ये पुरस्कार प्राप्त हुआ.

दरअसल आनंद बक्षी साहब का का उचित मूल्यांकन आज तक हुआ ही नहीं. उनके कुछ गीत तो अत्यंत उच्च कोटि के हैं और अच्छे से अच्छे साहित्य की टक्कर में रखे जा सकते हैं, मसलन ज़िन्दगी के सफर में(आपकी कसम), मैं शायर बदनाम और दिए जलते हैं फूल खिलते हैँ (नमक हराम), कुछ तो लोग कहेंगे और चिंगारी कोई भड़के (अमर प्रेम) आदमी मुसाफिर है (अपनापन) , खिज़ा के फूल पे आती कभी बहार (दो रास्ते),आया है मुझे फिर याद और बहारों ने मेरा चमन लूटकर (देवर), ये जीवन है इस जीवन का(पिया का घर), गाड़ी बुला रही है(दोस्त), तुम बेसहारा हो तो किसी का (अनुरोध), चिट्ठी आई है (नाम), चिट्ठी न क़ोई सन्देश (दुश्मन) आदि. ज़िन्दगी के विभिन्न रंगों को बयान करते इतने सारे अद्भुत गीत क्या क़ोई साधारण गीतकार लिख सकता है? जावेद अख्तर उनके बारे में कहते हैं कि भारत को गीतों का देश कहा जाता है क्योंकि यहाँ जन्म से लेकर मरण तक हर मौक़े के लिए गीत हैं, शादी के गीत, खुशी के गीत, गम के गीत , मौत के गीत

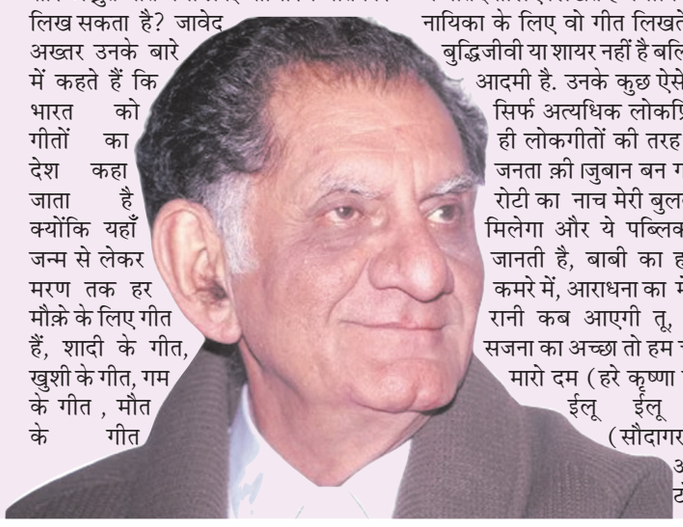

मौजूद हैं, मगर यदि ये सब नहीं भी होता तो भी एक अकेला आदमी आनंद बक्षी इस देश को गीतों का देश कहलाने के लिए काफ़ी था.

इतने बड़े गीतकार होने के बाद भी सादगी ऐसी कि वो अपने को शायर मानने से इंकार करते थे उनका कहना था कि वो महज एक फ़िल्मी गीतकार हैं और वो रोज़मर्रा क़ी जुबान में गीत इसलिए लिखते हैं क्योंकि जिस नायक नायिका के लिए वो गीत लिखते हैं वो क़ोई बुद्धिजीवी या शायर नहीं है बल्कि एक आम आदमी है. उनके कुछ ऐसे गीत जो ना सिर्फ अत्यधिक लोकप्रिय हुए साथ ही लोकगीतों की तरह पूरे देश की जनता क़ी ज़ुबान बन गए द्य फ़िल्म रोटी का नाच मेरी बुलबुलतुझे पैसा मिलेगा और ये पब्लिक है ये सब जानती है, बाबी का हम तुम एक कमरे में, आराधना का मेरे सपनो की रानी कब आएगी तू, आन मिलो सजना का अच्छा तो हम चलते हैं, दम मारो दम (हरे कृष्णा हरे राम), ये ईलू ईलू क्या है (सौदागर), ओये ओये तिरछी टोपी वाले (त्रिदेव), मोहरा का तू चीज बड़ी है मस्त मस्त, उड़ जा काले क़ावा (गदर)आदि ऐसे ही कुछ गीत हैं जो बताते हैं कि वो सही अर्थो में आज के दौर के लोक कवि थे. फिल्मों के रोमांटिक गीतों की कोई भी चर्चा उनके लिखे चाँद सी महबूबा हो मेरी, ज़िक्र होता है जब क़यामत का, हम तुम युग युग से गीत मिलन के, रूप तेरा मस्ताना, दिल क्या करे जब किसी को, प्यार दीवाना होता है,किसी राह में किसी मोड़ पर, मुझे कुछ कहना है, हम बने तुम बने एक दूजे, क्या यही प्यार है, तुझे देखा तो ये जाना सनम, टिप टिप बरसा पानी के बिना पूरी नहीं हो सकती.

बक्षी साहब ने एक ही विषय पर कितने ही भिन्न भिन्न गीत लिखे. धार्मिक गीतों की बात करें तो उनके लिखे सारे गीत न सिर्फ सुपर हिट हैं बल्कि वे हमारी संस्कृति का हिस्सा ही बन गए हैं, अवतार फ़िल्म का चलो बुलावा आया है, आशा का तूने मुझे बुलाया शेरा वालिये, सुहाग फ़िल्म का ओ शेरावाली आदि हमारे त्योहारों की बात करें तो होली पर लिखे उनके अमर गीत आज ना छोड़ेंगे हम हम जोली (कटी पतंग), होली के दिन दिल खिल जाते हैं (शोले), अंग से अंग लगाना (डर) और राखी पर लिखा उनका अमर गीत हम बहिनो के लिए मेरे भैया(अनजाना), गणेश चतुर्थी के लिए उनका लिखा दर्द का रिश्ता फिल्म का मेरे मन मंदिर में तुम भगवान रहे आदि के बिना ये त्योहार फीके मालूम पड़ते हैं.

दोस्ती पर लिखे गीतों की जब बात होती है तो सबसे पहले उनके लिखे हुए ये गीत याद आते हैं, ये दोस्ती हम नहीं छोड़ेंगे(शोले), बने चाहे दुश्मन ज़माना हमारा सलामत रहे (दोस्ताना), दिए जलते हैं फूल खिलते हैं(नमक हराम). इसी प्रकार फिल्मों के शीर्षक गीत लिखने में उनका कोई सानी नहीं था. फ़िल्म का शीर्षक कितना भी विचित्र हो बक्षी साहब उस पर गीत लिखने में उस्ताद थे.आपकी कसम, आन मिलो सजना, खिलौना, अमर अकबर एन्थोनी, हीरा पन्ना, बाबी,आशा, एक दूजे के लिए, कर्मा, चांदनी, रामलखन, मेरी जंग, हम, खुदागवाह, ताल, दिल तो पागल है से लेकर अफलातून, राम जाने तक अनेकों फिल्मों के सुपर हिट शीर्षक गीत उनके इस हुनर की मिसाल हैं. ऐसे महान गीतकार के एक महान गीत के साथ आज हम विदा लेते हैं, अगले हफ्ते फिर मुलाक़ात होगी.....

आदमी मुसाफिर है, आता है जाता है
आते जाते रस्ते में वो यादें छोड़ जाता है

माइकल कोर्स के ओपनिंग शो में शिरकत करेंगी संजना सांघी

अभिनेत्री संजना सांघी न्यूयॉर्क फ़ैशन वीक में मशहूर अमेरिकी डिज़ाइनर माइकल कोर्स के ओपनिंग शो का हिस्सा बनने को तैयार हैं. हाई फ़ैशन की प्रतिष्ठित दुनिया का ध्यान अब न्यूयॉर्क फ़ैशन वीक पर केंद्रित है. संजना सांघी इस वैश्विक मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करने जा रही हैं. वह माइकल कोर्स के ओपनिंग शो में अपने शानदार अंदाज़ में नज़र आने वाली हैं. उनकी मौजूदगी उस परंपरा को आगे बढ़ाएगी जिसे पहले प्रियंका चोपड़ा जोनस जैसी भारतीय सेलेब्रिटीज़ ने भी ब्रांड के साथ जोड़कर निभाया है.

संजना ने इससे पहले फ़रवरी 2019 में माइकल कोर्स के शो में स्टाइलिश प्लेड आउटफ़िट पहनकर फ्रंट रो में शिरकत की थी. हाल ही में, 2023 में, प्रियंका चोपड़ा ने भी एनवायएफडब्ल्यू में विक्टोरियाज सीक्रेट की एंबेसडर के रूप में हिस्सा लिया था, जहां उन्होंने रेड कार्पेट पर शिरकत की और ब्रांड की फ़िल्म द विक्टोरियाज सीक्रेट वर्ल्ड टूर पर बात की.इस सीज़न संजना एकमात्र भारतीय सेलेब्रिटी होंगी जो शो में शामिल होंगी.

फ़ैशन शो में शामिल होने के उत्साह पर बात करते हुए संजना ने कहा, फ़ैशन हमेशा से मेरे लिए आत्म-अभिव्यक्ति का एक ख़ास ज़रिया रहा है. मेरी हमेशा से क्लासिक और सिंपल स्टाइल रही है, और न्यूयॉर्क फ़ैशन वीक ओपनिंग शो में

माइकल कोर्स कॉउचर में सिर से पाँव तक सजे रहकर शिरकत करना मेरे लिए सम्मान की बात है. भारत से आमंत्रित एकमात्र अभिनेत्री होना मेरे असली स्वभाव की एक बड़ी मान्यता है, और लगता है जैसे सब कुछ अब पूरा हो गया हो.

53 वर्ष के हुए अनुराग कश्यप

बॉलीवुड के जानेमाने फिल्मकार अनुराग कश्यप आज 53 वर्ष के हो गए. अनुराग कश्यप का जन्म 10 सितंबर 1972 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में हुआ था . उनके पिता श्रीप्रकाश सिंह उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड के सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता थे और वाराणसी के पास सोनभद्र जिले के ओबरा थर्मल पावर स्टेशन में तैनात थे. अनुराग कश्यप ने अपनी प्राथमिक शिक्षा देहरादून के हिलग्रेंज प्रीपरेटरी स्कूल से तथा कक्षा सात के बाद की शिक्षा ग्वालियर के सिंधिया स्कूल से प्राप्त की .

वैज्ञानिक बनने की इच्छा के कारण, अनुराग कश्यप उच्च अध्ययन के लिए दिल्ली गए और हंसराज कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) में प्राणीशास्त्र पाठ्यक्रम में दाखिला लिया ; उन्होंने 1993 में स्नातक किया. फिर वह अंततः स्ट्रीट थिएटर ग्रुप, जन नाट्य मंच में शामिल हो गए और कई नुक्कड़ नाटक किए. उसी वर्ष, उनके कुछ दोस्तों ने उनसे भारत के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव देखने का आग्रह किया. दस दिनों में उन्होंने महोत्सव में 55 फिल्में देखीं, और विटोरियो डी सिका की साइकिल चोर वह फिल्म थी जिसने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया.

एक टेलीविजन धारावाहिक लिखने के बाद, अनुराग कश्यप को राम गोपाल वर्मा की अपराध ड्रामा सत्या (1998) में सह-लेखक के रूप में अपना बड़ा ब्रेक मिला और उन्होंने फ़िल्म पांच के साथ अपना निर्देशन पदार्पण किया , जो सेंसरशिप के मुद्दों के कारण कभी सिनेमाघरों में रिलीज नहीं हुई. उन्होंने फिर से राम गोपाल वर्मा के साथ फिल्म कौन (1999) के लिए टीम बनाई और शूल (1999) के संवाद भी लिखे. इसे अस्वस्थ मनोरंजन बताते हुए कहा गया कि यह सेक्स, ड्रग्स के प्रति बेपरवाह है और यह अलग-थलग पड़े युवाओं को गुमराह करेगा. फिल्म को बोर्ड ने 2001 में मंजूरी दे दी थी लेकिन यह रिलीज नहीं हुई. 2001 के बाद कश्यप ने युवा (2004), वाटर (2005) और मिक्स्ड डबल्स (2006) सहित कई फिल्मों के लिए संवाद लिखे.

अनुराग कश्यप की अगली फिल्म नो स्मोकिंग (2007) को नकारात्मक समीक्षा मिली और बॉक्स ऑफिस पर इसका प्रदर्शन खराब रहा. वर्ष 2009 में अनुराग कश्यप ने दो फिल्मों का निर्देशन किया. इनमें देव डी , और गुलाल शामिल है. पहली फिल्म सरन चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास देवदास का आधुनिक रूप है. फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर हिट घोषित किया गया और आलोचकों से सकारात्मक समीक्षा मिली हालांकि, वर्ष की उनकी दूसरी रिलीज गुलाल एक व्यावसायिक असफलता थी, लेकिन फिल्म को समीक्षकों द्वारा सराहा गया.

अनुराग कश्यप की अगली निर्देशित फिल्म दैट गर्ल इन येलो बूट्स (2011) में कल्कि कोचलिन ने अभिनय किया और इसे आम तौर पर भारत में सकारात्मक समीक्षा मिली. अनुराग कश्यप की प्रसिद्धि दो भाग की क्राइम ड्रामा , गैंग्स ऑफ वासेपुर (2012) से बढ़ी. इसके बाद कश्यप ने समीक्षकों द्वारा प्रशंसित ड्रामा द लंचबॉक्स (2013), और जीवनी पर आधारित ड्रामा शाहिद (2012) का सह-निर्माण किया.

अपनी फिल्मों को लेकर काजोल का बयान

बॉलीवुड अभिनेत्री काजोल का कहना है कि वह अपनी हर फिल्म को पूरी तरह से अपनाती हैं. फिर चाहे वह सुपरहिट हो जैसे दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे और कभी खुशी कभी गम या फिर ऐसी फिल्में जो यादा नहीं चलीं जैसे गुंडाराज और हलचल. वह जल्द ही सीरीज द ट्रायल के सीजन 2 में नजर आएंगी. काजोल ने बताया, मैं अपने करियर में कुछ भी बदलना नहीं चाहूंगी. उन्हें उन फिल्मों पर भी गर्व है, जो बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं हुईं. उन्होंने कहा, मेरी हर फिल्म ने मुझे कुछ सिखाया है. मैंने हर बार अपना 100 प्रतिशत दिया है. मैं गर्व से कह सकती हूं कि मैंने कैमरे के सामने कभी बेईमानी नहीं की.

काजोल ने 1995 में करण अर्जुन और दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्में दीं, लेकिन उसी साल उनकी ताकत, हलचल और गुंडाराज यादा नहीं चलीं. वह कहती हैं, हो सकता है कुछ फिल्में टिकट बिक्री में सफल न हुई हों, लेकिन मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा है.काजोल जल्द ही जियो हॉटस्टार की सीरीज द ट्रायल के दूसरे सीजन में नजर आएंगी. द ट्रायल को लेकर काजोल ने बताया कि एक ही किरदार को दोबारा निभाना उनके लिए नया अनुभव था. फिल्म में किरदार एक बार खत्म हो जाता है, लेकिन सीरीज में आप उसे और निखारते हैं. यह बहुत मजेदार है.

द ट्रायल का दूसरा सीजन 19 सितंबर को जियो हॉटस्टार पर स्ट्रीम होगी, जिसमें काजोल का किरदार नोयोनिका अब कानून की दुनिया में अपनी जगह बना चुकी है और नई चुनौतियों का सामना करती नजर आएंगी. द ट्रायल सीरीज अमेरिकी शो द गुड वाइफ का रूपांतरण है, जिसमें वह एक ऐसी गृहिणी की भूमिका में हैं, जो अपने पति की गिरफ्तारी के बाद वकील बनकर परिवार को संभालती है.

भगवान शिव की भूमिका निभाएंगे मोहित मलिक

अभिनेता मोहित मलिक सोनी सब के शो गणेश कार्तिकेय में भगवान शिव की भूमिका निभाते नजर आयेंगे.

सोनी सब ,नया शो गणेश कार्तिकेय लेकर आ रहा है. यह भव्य प्रस्तुति भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र गणेश और कार्तिकेय की अनकही कथा को सामने लाएगी.. इसके केंद्र में है माता-पिता का ज्ञान, दो भाइयों की यात्राएँ और एक ऐसे परिवार की भावनाएँ, जिनके संघर्ष हर घर के अनुभवों से मेल खाते हैं.

इस भव्यता को और बढ़ाते हुए, चर्चित अभिनेता मोहित मलिक भगवान शिव की भूमिका निभाते हुए नज़र आएंगे.मोहित मलिक ने कहा, गणेश कार्तिकेय में भगवान शिव का किरदार निभाना मेरे लिए परम सम्मान की बात है. शिव एक ऐसे देवता हैं जिन्हें उनकी शक्ति और करुणा के लिए पूजा जाता है, लेकिन इस भूमिका को लेकर मुझे सबसे ज्यादा उत्साह इस बात का है कि शो उन्हें केवल देवता के रूप में ही नहीं, बल्कि एक पिता, पति और मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत करता है. यह शो इस विचार का उत्सव मनाता है कि परिवार हर यात्रा की नींव है.

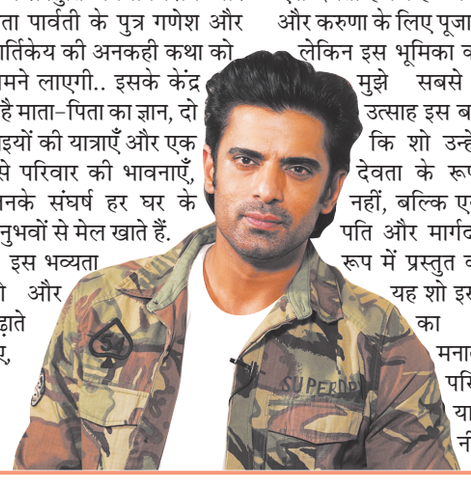

सलमान की फिल्म 'एक था टाइगर' फिर से होगी रिलीज

बॉलीवुड स्टार सलमान खान की सुपरहिट फिल्म 'एक था टाइगर' सिनेमाघरों में फिर से रिलीज होगी. सलमान खान न सिर्फ लाखों दिलों पर राज ही नहीं करते बल्कि बॉक्स ऑफिस पर भी धूम मचाने के लिए जाने जाते हैं. उन्होंने कई बड़ी हिट फिल्में दी हैं, जिसमें 2012 में प्रदर्शित एक था टाइगर का नाम शामिल है. इस फिल्म ने दर्शकों अपना दीवाना बना लिया था और यही वजह है कि यह ऑल-टाइम ब्लॉकबस्टर साबित हुई. ऐसे में अब आ रहे बड़े अपडेट में यह बताया गया है कि फिल्म बड़े पर्दे पर ग्रैंड री-रिलीज के लिए तैयार है.

एक था टाइगर की री-रिलीज के साथ सलमान खान फिर से टाइगर बनकर दर्शकों के दिलों पर राज करने के लिए तैयार हैं. यह सिर्फ सलमान के फैंस के लिए ही नहीं, बल्कि उन सभी के लिए भी खास मौका है, जिन्होंने इस जबरदस्त फिल्म को सिनेमाघरों में नहीं देखा है. अब वे बड़े पर्दे पर फिर से टाइगर की एक्शन, थ्रिल और जादू का अनुभव कर सकते हैं. एक था टाइगर 2012 की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर फिल्मों में से एक थी. यह यशराज फिल्म्स के स्पाई यूनिवर्स की पहली फिल्म थी, जिसने भारत को उसका सबसे करिश्माई जासूस टाइगर (सलमान खान) से मिलवाया और इस यूनिवर्स की नींव रखी. फिल्म का निर्देशन कबीर खान ने किया था और इसमें कैटरीना कैफ के अलावा रणवीर शौरी, रोशन सेठ और गिरीश कर्नाड ने अहम किरदार भूमिकाएं हैं.

इसके अलावा, सलमान खान की आने वाली फिल्मों की लाइनअप पूरी तरह से हाई-ऑक्टेन कमर्शियल एंटरटेनर्स से भरी हुई है.

पापोन का एल्बम तू मेरी पूरी कहानी हुआ रिलीज

जानेमाने गायक पापोन का एल्बम तू मेरी पूरी कहानी रिलीज हो गया है.

पापोन ने एक बार फिर फिल्म तू मेरी पूरी कहानी के लिए अपने नवीनतम एल्बम के साथ श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया है. पापोन और संगीतकार अनु मलिक इस बार तू मेरी पूरी कहानी के लिए फिर से साथ आए हैं, जो समीक्षकों द्वारा प्रशंसित मोह मोह के धागे के बाद उनका दूसरा शानदार सहयोग है.

एल्बम में छह दिल छू लेने वाले ट्रैक तू मेरी पूरी कहानी, भूलने की तुमको ,कौन है वो ,अब जब कि तू नहीं है , कुछ तो है वो और ये इश्क है शामिल है. अनु मलिक द्वारा रचित संगीत और श्वेता बोथरा द्वारा लिखे गए बोलों वाला यह एल्बम प्रेम और लालसा की एक शाश्वत तस्वीर पेश करता है. पापोन ने कहा, मोह मोह के धागे की सफलता के बाद अनु मलिक जी के साथ फिर से काम करना बेहद आनंददायक रहा है. उनकी रचनाओं में एक शाश्वत जादू है, और तू मेरी पूरी कहानी में उनके साथ फिर से काम करना वाकई एक प्यारा अनुभव रहा है.

भारत के चर्चित फिल्मकार एकजुट हुए

भारतीय सिनेमा के कुछ बेहतरीन फिल्ममेकर इस वीकेंड एक साथ आए, जहाँ उन्होंने बहुचर्चित मैजिकल रियलिज़्म ड्रामा अभिनेता मनोज बाजपेयी अभिनीत जुगनुमा का बड़े पर्दे पर आनंद लिया.इस खास स्क्रीनिंग की मेज़बानी ऑस्कर विजेता गुनित मोंगा कपूर और अनुराग कश्यप ने की, जो इस फिल्म के एग्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर भी हैं. फिल्म, जिसने अब तक दुनिया भर के कई प्रतिष्ठित फेस्टिवल्स में धूम मचाई है, भारत में 12 सितंबर को सिनेमाघरों में रिलीज़ हो रही है.इस मौके पर मौजूद मेहमानों की शानदार लिस्ट में दिग्गज सईद अख्तर मिर्ज़ा और सुधीर मिश्रा शामिल थे, साथ ही नामी फिल्मकार, जैसे विक्रमादित्य मोटवाने, अभिषेक चौबे, अमर कौशिक, वसन बाला, अद्वैत चंदन, अयप्पा केएम, नंदिता दास, रीमा दास, हनी त्रेहन, मोअज़ेज़ सिंह, उमेश बिष्ट, आदित्य सरपोतदार, अमित जोशी और श्लोक शर्मा भी पहुँचे.